Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

शहरी तथा ग्रामीण जनसंख्या में महिला व पुरुष रोजगार भागीदारी का अध्ययन

Dr. Padma Tripathi*

Associate Professor, Economics, K.K.P.G. College, Etawah

सारांश – *विकास खण्ड अजीतमल के शहर अजीतमल, बाबरपुर, अटसू तथा अनन्तराम में औसत परिवार 5.02 सदस्य हैं जिसमें औसतन 2.56 पुरुष तथा 2.36 महिलायें हैं। महिला व पुरुष की जनसंख्या का अनुपात ठीक है। परिवारों के सदस्यों की जनसंख्या न ज्यादा और न कम है। महिला की जनसंख्या औसत परिवार पुरुष से कम है। वर्गवार अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि प्रत्येक आयु वर्ग में महिला की संख्या पुरुष से कम है। सर्वाधिक अन्तर 18-50 आयु वर्ग में है, जिसमें महिला औसत 0.72 तथा पुरुष औसत 0.81 है।*

परिवार में औसतन 5.02 व्यक्तियों का खर्च उठाना कठिन है क्योंकि सभी व्यक्ति रोजगार से नहीं जुड़े हैं, केवल वयस्क (18-50 आयु वर्ग) वाले व्यक्ति ही पूर्ण रूप से रोजगार से जुड़कर जीविका अर्जन कर रहे हैं, अन्य में बच्चे हैं जो या तो बहुत छोटे हैं या पढ़ाई कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त वृद्ध हैं जो स्वयं वृद्धावस्था के कारण रोजगार से बहुत अधिक नहीं जुड़े हैं।

परिवार के सभी आयु वर्ग के लोगों का थोड़ा या बहुत रोजगार अर्जन में योगदान है तब औसत आय प्रतिदिना/प्रति व्यक्ति रुपये 26.72 विभिन्न स्रोतों से है, जो गरीबी की तरफ इशारा करती है। जबकि औसत प्रति व्यक्ति प्रतिदिन व्यय विभिन्न मदों में रुपये 24.82 है। 24.82 रुपये में व्यक्ति प्रतिदिन अच्छी तरह से अपना पेट भी आसानी से नहीं भर सकता। इसके अतिरिक्त अन्य खर्च भी हैं, जो सामाजिक रूप से उसे अवश्य वहन करने पड़ते हैं।

अजीतमल विकास खण्ड के सभी शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है जिसके अनेक कारण हो सकते हैं, जिसमें कन्या भ्रूण हत्या, महिला का उम्र से पहले ही मर जाना, महिला कुपोषण आदि हो सकता है।

विकास खण्ड बिधूना के शहरी क्षेत्रों में औसतन सदस्य प्रति परिवार 5.04 हैं जिसमें विभिन्न आयु वर्ग में महिला तथा पुरुष शामिल हैं। औसतन 2.4 महिला तथा 2.65 पुरुष हैं। पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक है।

इस विकास खण्ड के शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या का कम होना यह प्रतीत कराता है कि इन क्षेत्रों में भी कन्या भ्रूण हत्या व महिलाओं की असमय मृत्यु जैसी बुराई फैली है, जिसका कारण निर्धनता है।

बिधूना विकास खण्ड के शहरी क्षेत्रों में विभिन्न आयु वर्ग में महिलाओं की संख्या कम है जबकि पुरुषों की अधिक। सर्वाधिक अन्तर 0-10 आयु वर्ग में है जिसमें औसतन 0.51 स्त्री तथा 0.59 पुरुष हैं।

इस आधुनिक युग में जबकि मँहगाई इतनी अधिक है और रोजगार के साधन कम तब औसतन 5 लोगों का खर्च वहन करना बहुत कठिन है, जिसके कारण इस क्षेत्र में गरीबी है। विकास खण्ड बिधूना में प्रत्येक आयु वर्ग का औसत विभिन्न रोजगार साधनों से प्रति व्यक्ति प्रतिदिन रुपये 25.25 है जो गरीबी रेखा के काफी नीचे है जिसके कारण इस विकास खण्ड के लोग निर्धन हैं।

बिधूना विकास खण्ड के शहरी क्षेत्रों में लोग औसतन विभिन्न मदों में मात्र प्रतिदिन प्रति व्यक्ति रुपये 25.32 खर्च कर पाते हैं जो गरीबी रेखा के नीचे का संकेत है।

www.ignited.in

अजीतमल तथा बिधूना के शहरी क्षेत्रों में दैनिक उपभोग की वस्तुओं के दाम मण्डी में ऊँचे हैं। मँहगे दामों पर सभी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। जैसे- गेहू 12 रुपये किलो, दाल 40 रुपये किलो, हरी सब्जी 8 रुपये किलो, अन्य सब्जी 8 रुपये किलो, जड़ व तना की सब्जी 6 रुपये किलो, दूध 22 रुपये किलो, तेल 40 रुपये किलो तथा शक्कर 30 रुपये किलो।

उपर्युक्त भाव के अनुसार यहाँ के शहरी क्षेत्रों में खर्च चलाना पड़ता है जिसके कारण विभिन्न मदों से कमाया गया धन लगभग समाप्त हो जाता है, और निर्धनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अजीतमल तथा बिधूना विकास खण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि- अजीतमल विकास खण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार बड़े हैं। औसतन एक परिवार में 5.05 सदस्य हैं जिसमें 2.41 महिलायें तथा 2.62 पुरुष है। वर्गवार चारों ग्रामीण क्षेत्रों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सर्वाधिक जनसंख्या 18-50 आयु वर्ग में 0.65 स्त्री तथा 0.72 पुरुष की है।

प्रत्येक आयु वर्ग में यह ज्ञात हो रहा है कि महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है।

इसी प्रकार बिधूना विकास खण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक आयु वर्ग में महिलाओं की संख्या पुरुषों से कम है। बिधूना के ग्रामों में औसतन परिवार बड़े हैं जिसमें औसतन 5.34 सदस्य हैं जिसमें 2.61 महिलायें तथा 2.72 पुरुष हैं।

----------X----------

प्रस्तावना

गरीबी किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र के लिए अभिशाप है। इसके निवारण से ही प्रगति का रास्ता खुलेगा। इसीलिये प्रथम पंचवर्षीय योजना से लगातार सरकार इस ओर प्रयासरत है। गरीब अपनी आय का लगभग 80 प्रतिशत भाग भोजन पर खर्च करता है जिसको सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से पूरा करने का प्रयास कर रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मध्यम वर्ग उभर कर आया है जो इस बात का द्योतक है कि गरीबी में सुधार हुआ है। यह सुधार सरकार द्वारा प्रायोजित शैक्षिक उपलब्धता, आरक्षण व्यवस्था, महिलाओं व बालिकाओं को विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित करने जैसी योजनाओं के कारण सम्भव हुआ है। मार्विन जे. सेट्रोन के कथन के अनुसार 390 मि. भारतीय मध्यम वर्ग में शामिल हैं जो 10 वर्ष पहले गरीबी रेखा से नीचे थे। ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में स्थानान्तरित व्यक्तियों के लिए सरकार शहरी क्षेत्रों में उद्योगों आदि व्यवसायों के माध्यम से रोजगार सृजन कर रही है। जनसंख्या वृद्धि पर कड़ाई से अंकुश लगाना अति आवश्यक है वरना सारे सरकारी प्रयास ऊँट के मुँह में जीरा साबित होंगे। व्यक्तियों में शिक्षा, तकनीकी ज्ञान व वैज्ञानिक सोच का विकास कर लघु व कुटीर उद्योगों को पुनः विकसित किया जाये। कृषि आधारित उद्योगों का विकास कर रोजगार सृजित कर गरीबी उन्मूलन का प्रयास किया जाना चाहिए। जल संरक्षण व सिंचाई के साधनों को विकसित कर मानसून निर्भरता कम करके कृषि उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। उद्योगों का विकेन्द्रीकरण भी रोजगारपरक साबित होगा। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसायिक व आधुनिक शिक्षा प्रणाली विकसित की जाये तो स्वरोजगार को बढ़ावा मिलेगा। यदि स्त्री शिक्षा पर ध्यान दिया जाये तो बेरोजगारी, धार्मिक संकीर्णता, सामाजिक बुराइयों आदि पर विजय पाई जा सकती है।

सरकारी प्रयास के अलावा गैर सरकारी संगठन भी इस दिशा में ईमानदारी से कार्य करें। ग्रामीण व्यक्तियों को उचित ज्ञान प्रदान कर समाज की आधुनिक धारा में शामिल करें। किसानों से सरकार सीधी खरीद को बढ़ावा दे ताकि उनका शोषण न हो व उपज का पूरा मूल्य मिल सके। ग्रामीण क्षेत्रों में उनके क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का पूरा परिचय, प्रयोग व भावी संभावनाओं की जानकारी देकर उस क्षेत्र की उत्पादकता को बढ़ाने का प्रयास किया जाये। मोटे अनाज अर्थात् निम्न गुणवत्ता के अनाज इत्यादि नामों से परिचित ज्वार, बाजरा, रागी, सवा, कोदु आदि अनाजों जो कि पौष्टिकता से भरपूर हैं व हमारी जीवन पद्धति के अनुकूल है, भोजन में शामिल करने चाहिए। इनमें औषधीय गुण भी होते हैं। इससे खाद्य सुरक्षा व पौष्टिकता सुरक्षा दोनों लक्ष्य प्राप्त हो जायेंगे।

भारतीय अर्थव्यवस्था में गरीबी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। लेकिन मेरी राय में इस गरीबी के लिये व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी है। भारतीय व्यक्ति केवल वर्तमान में जीता है, भूतकाल से सबक नहीं लेता है तथा भविष्य को देखना नहीं चाहता है। यह तथ्य व्यक्ति व सरकार दोनों पर लागू होता है। व्यक्ति काफी हद तक समस्याओं का जन्मदाता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन पूर्ण करने हेतु जनपद की दो तहसीलों को चुना गया जिसमें से प्रत्येक तहसील से एक-एक विकास खण्ड

www.ignited.in

तथा प्रत्येक विकास खण्ड से चार ग्रामीण तथा चार शहरी क्षेत्रों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों से बीस-बीस परिवारों को दोनों विकास खण्ड से चयनित किया। सम्पूर्ण अध्ययन प्रक्रिया में चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया है। कुल मिलाकर 160 ग्रामीण तथा 160 शहरी परिवारों से समंकों को एकत्र कर अध्ययन पूर्ण करने की कोशिश की गई।

नव सृजित जनपद प्राचीन समय से दस्यु प्रभावित रहा है जिसका प्रभाव यहाँ के विकास पर पड़ा है। यहां पर निर्धनता को लेकर अभी तक कोई भी शोध नहीं किया गया है। इस कारण शोध निर्धनता पर किया गया है। यहां का ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र अति पिछड़ा है। रोजगार के साधन नगण्य हैं। केवल कुछ प्रतिशत जनसंख्या खेती पर आधारित रहकर अपना जीवन यापन कर रही है। कृषि में भी पैदावार की स्थिति अधिक ठीक नहीं है। जनपद की मृदा कटाव युक्त, कंकरीली है। नदियों की अधिकता के कारण बीहड़ क्षेत्र अधिक है। जिसके कारण ऊबड़ खाबड़ कटाव, खाइयाँ आदि अधिक हैं। कुछ जगह समतल है वहां पर पैदावार बहुत अच्छी होती है। किसान एक वर्ष में चार-चार फसलें पैदा कर रहे हैं जिसमें नगदी फसलें भी शामिल हैं। सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का पूर्णरूपेण क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है, जिसका एक प्रभावित कारण दस्यु प्रभावित क्षेत्र का होना है। अध्ययन के समय समंकों को एकत्र करने में भी इस समस्या का सामना करना पड़ा। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निर्धनता मापने के अनेक आधार माने जिसमें से प्राप्त खाद्य कैलोरी में, प्राप्त सुविधा, परिवार की जनसंख्या, पारिवारिक आय तथा कृषि जोत आदि शामिल हैं।

सूचना के स्रोत तथा समंकों का संग्रहण

प्रस्तुत शोध में 160 ग्रामीण व 160 शहरी परिवार को दैवनिदर्शन विधि से चयनित कर अध्ययन का आधार माना गया। जिसमें दो प्रकार से समंकों को एकत्र किया गया-

(i) प्राथमिक समंकों का संग्रहण-

प्राथमिक समंकों को अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अनुसूची बनाकर साक्षात्कार द्वारा एकत्र किया गया। जिसमें चयनित परिवार से जानकारी प्राप्त की गयी। जिसमें-मुखिया का नाम, स्त्री, पुरुष तथा बच्चों संख्या, आय-व्यय के साधन, व्यक्तिगत तथा सामूहिक आय, उपभोग स्तर, साक्षरता, ऋण ग्रसतता तथा विभिन्न कुरीतियों के बारे में पूछताछ कर जानकारी ली गयी और तालिकाबद्ध कर शोध में प्रयोग किया गया।

(ii) द्वितीयक समंकों का संग्रहण-

प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित प्रकाशित शोध-ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों सरकारी तथा अर्द्धसरकारी कार्यालयों द्वारा प्रकाशित तालिकाओं, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय अखबारों, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित संगोष्ठियों तथा सेमिनार से प्राप्त अध्ययन सामग्री का प्रयोग द्वितीयक समंकों को संग्रहित कर शोध पूर्ण करने में सहायता ली गयी।

साक्षात्कार के समय जो आँकड़े प्रस्तुत हुए उनका लगभग मिलान व स्पष्टीकरण सम्बन्धित सरकारी व अर्द्धसरकारी विभागों से प्राप्त जानकारी के अनुसार करने के पश्चात् ही शोध में प्रस्तुत किया गया।

चयनित क्षेत्र के अध्ययन के लिये चयनित परिवार से प्राप्त जानकारी को तालिकाबद्ध किया गया है। इसी आधार पर कृषि जोत का आकार, परिवार की कुल जनसंख्या तथा उम्र के हिसाब से सदस्यों की जानकारी, रोजगार की स्थिति, शिक्षित रोजगार व अशिक्षित रोजगार की स्थिति, पौष्टिकता स्तर, आय-व्यय का ब्यौरा, ऋण की स्थिति तथा बचत आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी।

सर्वेक्षण आंकणों का विश्लेषण

शहरी व ग्रामीण जनसंख्या में महिला पुरुष रोजगार भागीदारी का औसत अनुपात में तालिका नम्बर-अ-(i) शहरी जनसंख्या में महिला-पुरुष रोजगार सहभागिता से यह प्रतीत होता है कि अजीतमल में 20 परिवारों में केवल 64 लोग रोजगार से जुड़े हुए हैं जिसमें स्त्रियों का प्रतिशत 46.87 व पुरुषों का 53.12 है। कुल 30 स्त्रियां तथा 34 पुरुष रोजगार से लगे हुए हैं।

आयु वर्गवार अध्ययन से पता चलता है कि 0-10 आयु वर्ग में 4 स्त्रियां व 4 पुरुष जिनका औसत 0.20 व 0.20 है। किसी रोजगार से जुड़कर धनोपार्जन करते हैं। 10-18 आयु वर्ग में 6 लड़कियां व 8 लड़के जिनका रोजगार सहभागिता में औसत 0.30 व 0.40 है रोजगार से जुड़कर धनोपार्जन कर रहे हैं। आयु वर्ग 18-50 में 12 स्त्रियां व 12 पुरुष जिनका औसत 0.60 व 0.60 है रोजगार में भागीदारी प्रस्तुत कर रहे हैं। आयु वर्ग 50 से ऊपर में 8 स्त्रियाँ व 10 पुरुष जिनकी औसत रोजगार भागीदारी 0.40 व 0.50 है।

अजीतमल में प्रत्येक आयु वर्ग के लोग किसी न किसी अनुपात में अपनी रोजगार सहभागिता प्रस्तुत कर रहे हैं। अधिकतर पुरुषों की भागीदारी महिलाओं से अधिक है। सर्वाधिक 18-50 आयु वर्ग के लोगों की रोजगार सहभागिता

www.ignited.in

अधिक है क्योंकि यही वयस्क लोग परिवार के मुखिया हैं। स्त्रियों में प्रत्येक वर्ग का तुलनात्मक अध्ययन पर निष्कर्ष निकलता है कि सर्वाधिक 18-50 तथा 50 से अधिक आयु वर्ग की सहभागिता अन्य की तुलना में अधिक है। पुरुषों में भी 18-50 व 50 से अधिक आयु वर्ग की रोजगार सहभागिता 0-10, 10-18 आयु वर्ग से अधिक है।

बाबरपुर शहरी क्षेत्रों में आंकड़ों से पता चलता है कि कुल जनसंख्या में औसत 64 लोग रोजगार से जुड़े हुए हैं जिसमें 31 स्त्रियाँ तथा 33 पुरुष हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 48.58 व 51.41 है।

आयु वर्गवार अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्येक आयु वर्ग के लोग बाबरपुर में रोजगार से जुड़कर अपनी पारिवारिक आय में सहभागिता कर रहे हैं। 0-10 आयु वर्ग में 4 स्त्रियां, 4 पुरुष जिनका औसत 0.20 तथा 0.20 है रोजगार से जुड़े हुए हैं। आयु वर्ग 10-18 में औसत 6 स्त्रियाँ व 7 पुरुष रोजगार से जुड़े हुए हैं, जिनका औसत 0.30 व 0.35 है। आयु वर्ग 18-50 में सर्वाधिक 12 स्त्रियां तथा 12 पुरुष रोजगार से जुड़े हुए हैं जिनका औसत 0.60 व 0.60 है। 50 से अधिक आयु वर्ग में औसत सहभागिता 0.45 स्त्रियां तथा 0.50 पुरुषों की है जिनकी संख्या 9 व 10 है।

अटसू शहर की औसत कुल जनसंख्या में 61 लोग ही रोजगार से लगे हुए हैं जिसमें स्त्रियों का प्रतिशत 45.90 व पुरुषों का प्रतिशत 54.09 है। कुल 61 में से औसत 28 स्त्रियाँ व 33 पुरुष रोजगार से जुड़े हैं।

आयु वर्ग का अध्ययन से पता चलता है कि 0-10 आयु वर्ग में औसत 4 स्त्रियां तथा 4 पुरुष जिनका औसत 0.20 व 0.20 क्रमशः है, रोजगार में जुड़े हुए हैं। 10-18 आयु वर्ग में औसत 6 स्त्रियां व 7 पुरुष जिनका कुल औसत 20 परिवारों में 0.30 स्त्रियां व 0.35 पुरुष है जो रोजगार में लिप्त हैं। 18-50 आयु वर्ग में 10 स्त्रियां व 12 पुरुष जिनका कुल परिवारों में औसत 0.50 व 0.60 है रोजगार से जुड़े हैं। 50 से ऊपर आयु वर्ग में औसत 0.40 स्त्रियां व 0.50 पुरुष जिनकी संख्या क्रमशः 8 व 10 है रोजगार से जुड़े हैं। अटसू में कुल मिलाकर 18-50 आयु वर्ग के लोग अधिक रोजगार सहभागिता रखते हैं। इस वर्ग में पुरुषों की सहभागिता स्त्रियों से अधिक है। लगभग सभी वर्गों में पुरुषों की रोजगार सहभागिता स्त्रियों से अधिक है।

अ (1) शहरी व ग्रामीण जनसंख्या में महिला-पुरुष रोजगार भागीदारी का औसत अनुपात

तालिका नं. अ- (i) शहरी जनसंख्या में महिला-पुरुष रोजगार भागीदारी

शहर का नाम	आयु वर्ग / लिंग	0 - 10		10 - 18		18 - 50		50 से अधिक		कुल जनसंख्या		
		स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	कुल
अनीतराम	औसत	0.20	0.20	0.30	0.40	0.60	0.60	0.40	0.50	1.50	1.70	3.20
	प्रतिशत	13.33	11.76	20.00	23.52	40.00	35.29	26.66	29.41	46.87	53.12	
	कुल सं.	4	4	6	8	12	12	8	10	30	34	64
बाबरपुर	औसत	0.20	0.20	0.30	0.35	0.60	0.60	0.45	0.50	1.55	1.65	3.20
	प्रतिशत	12.90	12.12	19.35	21.21	38.70	36.36	29.03	30.30	48.58	51.41	
	कुल सं.	4	4	6	7	12	12	9	10	31	33	64
अटसू	औसत	0.20	0.20	0.30	0.35	0.50	0.60	0.40	0.50	1.40	1.65	3.05
	प्रतिशत	14.28	12.12	21.43	21.21	35.71	36.36	28.57	30.30	45.90	54.09	
	कुल सं.	4	4	6	7	10	12	8	10	28	33	61
अनन्तराम	औसत	0.20	0.20	0.35	0.40	0.50	0.60	0.35	0.55	1.40	1.75	3.15
	प्रतिशत	14.28	11.43	25.00	22.86	35.71	35.28	25.00	31.43	44.44	55.55	
	कुल सं.	4	4	7	8	10	12	7	11	28	35	63
औसत	औसत	0.20	0.20	0.31	0.37	0.55	0.60	0.40	0.51	1.46	1.68	3.15
	प्रतिशत	13.70	11.90	21.23	22.02	37.67	35.71	27.40	30.36	46.35	53.33	
	कुल सं.	4.0	4.0	6.2	7.5	11.0	12.0	8.00	10.20	29.25	33.60	62.85

अनन्तराम शहर में 0-10 आयु वर्ग में 0.20 स्त्रियां, 0.20 पुरुष औसत परिवारों में जिनकी संख्या क्रमशः 4 व 4 है, रोजगार से जुड़े हैं। 10-18 आयु वर्ग में औसत भागीदारी 0.35 स्त्रियां व 0.40 पुरुष है, जिनकी औसत संख्या 7 स्त्रियां व 8 पुरुष है, जो कई प्रकार के रोजगार में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करते हैं। 18-50 आयु वर्ग में औसत 10 स्त्रियां व 12 पुरुष जिनका औसत 0.50 व 0.60 है, रोजगार से जुड़े हुए हैं। 50 से अधिक उम्र वाले वर्ग में 7 स्त्रियां व 11 पुरुष रोजगार से जुड़े हैं जिनका औसत क्रमशः 0.35 व 0.55 है। अनन्तराम शहर में पुरुषों की रोजगार भागीदारी महिलाओं से अधिक है। सर्वाधिक भागीदारी 18-50 आयु वर्ग की है।

कुल जनसंख्या में से अनन्तराम में 63 औसत लोग ही रोजगार से जुड़े हैं जिसमें महिलाओं की संख्या 28 व पुरुषों की 35 है।

सभी शहरी क्षेत्रों का औसत करने पर यह निकलकर आया है कि 0-10 आयु वर्ग में औसत भागीदारी रोजगार में 0.20 स्त्रियों की, 0.20 पुरुषों की है। 10-18 आयु वर्ग में 0.31 स्त्रियों व 0.37 पुरुषों की रोजगार में भागीदारी है। 18-50 आयु वर्ग में 0.55 स्त्रियां व 0.60 पुरुष रोजगार से जुड़े हुए हैं। 50 से अधिक वर्ग में औसत सहभागिता स्त्रियों की 0.40 व पुरुषों की 0.51 है। सर्वाधिक भागीदारी सभी शहरों में 18-50 आयु वर्ग की है जिसमें औसतन 11 स्त्रियां तथा 12 पुरुष रोजगार कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। बालकों व वृद्धों विशेषकर वृद्ध स्त्रियों की सहभागिता कम है।

तालिका नम्बर-अ-(ii) ग्रामीण जनसंख्या में महिला पुरुष रोजगार औसत भागीदारी से स्पष्ट होता है कि ग्राम साँफर में औसत 20 परिवारों की जनसंख्या में 74 लोग ही रोजगार से

जुड़े हुए हैं जिसमें 37 स्त्रियां तथा 37 पुरुष शामिल हैं। कुल रोजगारपरक जनसंख्या में स्त्रियों का प्रतिशत 50 तथा पुरुषों का प्रतिशत 50 है।

आयु वर्ग वार अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि 0-10 आयु वर्ग में 5.0 स्त्रियां व 5.0 पुरुष जिनका औसत 0.25 तथा 0.25 है, रोजगार से जुड़े हुए हैं। 10-18 आयु वर्ग में 10 स्त्रियां व 10 पुरुष जिनका औसत 0.50 व 0.50 क्रमशः है रोजगारपरक हैं। 18-50 आयु वर्ग में औसत रोजगार सहभागिता 0.60 व 0.60 है जिनकी संख्या क्रमशः 12.0 व 12.0 स्त्रियों तथा पुरुषों की है। आयु वर्ग 50 से अधिक में औसत रोजगार सहभागिता स्त्रियों में 0.50 व पुरुषों में 0.50 है जिनकी संख्या क्रमशः 10 व 10 है।

ग्राम साँफर में स्त्रियों तथा पुरुषों की रोजगार सहभागिता लगभग समान है। स्त्री वर्ग में रोजगार सहभागिता क्रमशः घटते हुये क्रम में 12, 10, 10 व 5 क्रमशः 18-50, 10-18, 50 से अधिक व 0-10 आयु वर्ग की है।

ग्राम फूलपुर में महिला पुरुष रोजगार सहभागिता के अन्तर्गत निम्न परिणाम सामने आये हैं। उक्त ग्राम में कुल जनसंख्या में 76 व्यक्ति रोजगार से संलग्न हैं जिसमें 37 स्त्रियां तथा 39 पुरुष हैं। कुल सहभागिता में स्त्रियों का प्रतिशत 48.68 है जबकि पुरुषों का प्रतिशत 51.31 है। विभिन्न आयु वर्ग के अनुसार अध्ययन से स्पष्ट है कि 0-10 आयु वर्ग में कुल स्त्रियों की संख्या 5 व कुल पुरुषों की संख्या भी 5 है। इसी वर्ग में दोनों का औसत भी क्रमशः 0.25 व

0.25 है। आयु वर्ग 10-18 में स्त्री-पुरुष रोजगार सहभागिता क्रमशः औसत 0.55 व 0.55 है जो कुल स्त्री व पुरुष रोजगार जनसंख्या का 29.73 व 28.20 प्रतिशत है। इसी वर्ग में 11 स्त्रियां व 11 पुरुष रोजगार में लगे हुए हैं। 18-50 वर्ग में 0.55 औसत स्त्रियां तथा 0.65 औसत पुरुष रोजगार में लिप्त हैं जिनकी संख्या क्रमशः 11 तथा 13 है जो कुल रोजगारी महिलाओं तथा पुरुषों की संख्या का 29.73 व 33.33 प्रतिशत है। 50 से अधिक आयु वर्ग में स्त्रियों तथा पुरुषों का औसत समान है 0.50, 10 स्त्रियां तथा 10 पुरुष कामकाजी हैं जिनका कुल कामकाजी स्त्रियों तथा पुरुष जनसंख्या में क्रमशः 27.03 व 25.64 का प्रतिशत है।

इस ग्राम में कुल कामकाजी जनसंख्या 76 में 48.68 स्त्रियों तथा 51.31 पुरुष रोजगार में लिप्त हैं।

ग्राम मोहारी में कुल जनसंख्या में 77 लोग कामकाजी हैं जिसमें 37 स्त्रियां तथा 40 पुरुष रोजगार में लिप्त हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 48.05 व 51.95 है। वर्गवार अध्ययन से पता चला कि 0-10 वर्ग में क्रमशः स्त्रियों तथा पुरुषों का औसत 0.30 व 0.30 है जिसमें कुल कामकाजी जनसंख्या में स्त्रियों तथा पुरुषों का प्रतिशत 16.22 व 15.00 रहा। इस वर्ग में 6 स्त्री व 6 पुरुष कामकाज से जुड़े हुए हैं। 10-18 आयु वर्ग में 11 स्त्रियां तथा 11 पुरुष रोजगार में लगे हैं जिनका औसत क्रमशः 0.55 व 0.55 है जो कुल स्त्री व पुरुष कामकाजी संख्या का 29.73 व

27.50 प्रतिशत है। 18-50 वर्ग में स्त्रियों की रोजगार भागीदारी औसत 0.50 व पुरुषों की 0.65 है, कुल रोजगार में स्त्री तथा पुरुष की भागीदारी क्रमशः 27.03 व 32.50 प्रतिशत है। कुल इस वर्ग में 10 स्त्रियां व 13 पुरुष रोजगार से जुड़े हैं। 50 से अधिक वर्ग में 10 स्त्रियां व 10 पुरुष रोजगार में लिप्त हैं जो कुल स्त्री संख्या का 27.03 प्रतिशत तथा कुल पुरुष जनसंख्या का 25.0 प्रतिशत है। औसत 0.50 स्त्रियां तथा 0.50 पुरुष रोजगार से लगे हैं।

ग्राम जगन्नाथपुर में कुल जनसंख्या में 77 लोग ही रोजगार से जुड़े हैं जिनमें से कुल 36 स्त्रियां तथा 41 पुरुष हैं। कुल का 46.75 प्रतिशत स्त्रियां तथा 53.25 प्रतिशत पुरुष रोजगार में लिप्त हैं। वर्गवार अध्ययन से पता चला कि 0-10 वर्ग में औसतन 0.25 स्त्रियां तथा 0.25 पुरुष जिनका कि प्रतिशत क्रमशः 13.88 व 12.19 है जो संख्या में क्रमशः 5 व 5 है, रोजगार कर रहे हैं। आयु वर्ग 10-18 में रोजगार से जुड़े स्त्रियों तथा पुरुषों की जनसंख्या, प्रतिशत तथा औसत निम्न प्रकार है- जनसंख्या 10 व 12, प्रतिशत क्रमशः 27.78 व 29.27 तथा औसत क्रमशः 0.50 व 0.60 है। आयु वर्ग 18-50 में औसतन 0.60 स्त्रियां तथा 0.70 पुरुष जिसका प्रतिशत क्रमशः33.33 व 34.15 है रोजगार से जुड़े हैं। इस वर्ग में कुल रोजगारपरक संख्या स्त्रियों की 12 व पुरुषों की 14 है। 50 से अधिक आयु वर्ग में औसत 0.45 स्त्रियां व 0.50 पुरुष कामकाजी हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 25 तथा 24.39 है। कुल 9 स्त्रियां तथा 10 पुरुष कामकाजी हैं।

तालिका नं. अ- (ii) ग्रामीण जनसंख्या में महिला-पुरुष रोजगार भागीदारी

गाँव का नाम	आयु वर्ग / लिंग	0 - 10 स्त्री	0 - 10 पुरुष	10 - 18 स्त्री	10 - 18 पुरुष	18 - 50 स्त्री	18 - 50 पुरुष	50 से अधिक स्त्री	50 से अधिक पुरुष	कुल जनसंख्या स्त्री	कुल जनसंख्या पुरुष	कुल
साँफर	औसत	0.25	0.25	0.50	0.50	0.60	0.60	0.50	0.50	1.85	1.85	3.70
	प्रतिशत	13.51	13.51	27.03	27.03	32.43	32.43	27.03	27.03	50.00	50.00	
	कुल सं.	5	5	10	10	12	12	10	10	37	37	74
फूलपुर	औसत	0.25	0.25	0.55	0.55	0.55	0.65	0.50	0.50	1.85	1.95	3.80
	प्रतिशत	13.51	12.82	29.73	28.20	29.73	33.33	27.03	25.64	48.68	51.31	
	कुल सं.	5	5	11	11	11	13	10	10	37	39	76
मोहारी	औसत	0.30	0.30	0.55	0.55	0.50	0.65	0.50	0.50	1.85	2.00	3.85
	प्रतिशत	16.22	15.00	29.73	27.50	27.03	32.50	27.03	25.00	48.05	51.95	
	कुल सं.	6	6	11	11	10	13	10	10	37	40	77
जगन्नाथपुर	औसत	0.25	0.25	0.50	0.60	0.60	0.70	0.45	0.50	1.80	2.05	3.85
	प्रतिशत	13.88	12.19	27.78	29.27	33.33	34.15	25.00	24.39	46.75	53.25	
	कुल सं.	5	5	10	12	12	14	9	10	36	41	77
औसत	औसत	0.26	0.26	0.52	0.55	0.56	0.65	0.49	0.50	1.84	1.96	3.80
	प्रतिशत	14.13	13.26	28.26	28.06	30.43	33.16	26.63	25.51	48.37	51.62	
	कुल सं.	5.25	5.25	10.5	11.0	11.25	13.0	9.75	10.0	36.75	39.25	76.00

ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन से जो परिदृश्य सामने आया है वह है कि सभी ग्रामों में औसत 0-10 आयु वर्ग में 14.13% स्त्रियां

www.ignited.in

तथा 13.26% पुरुष; 10-18 वर्ग में 28.26% स्त्रियां तथा 28.06% पुरुष; 18-50 आयु वर्ग में 30.43% स्त्रियां तथा 33.16% पुरुष; 50 से ऊपर आयु वर्ग में 26.63% स्त्रियां तथा 25.51% पुरुष कामकाजी हैं। सर्वाधिक 18-50 आयु वर्ग में 11.25 स्त्रियां व 13 पुरुष इसके बाद 10-18 आयु वर्ग में 10.5 स्त्रियां व 11 पुरुष औसतन कामकाजी हैं। सबसे कम रोजगार जुड़ाव 0-10 आयु वर्ग में है जिसमें 5.25 स्त्रियां तथा 5.25 पुरुष ही रोजगार से जुड़े हैं।

अजीतमल विकास खण्ड में शहरी व ग्रामीण जनसंख्या में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त शुद्ध आय का औसत व्यक्तिगत पूछताछ द्वारा प्राप्त किया गया जिसमें केवल चार शहरी व चार ग्रामीण क्षेत्रों से 20-20 परिवारों को ही चुना गया। यह निकलकर आया कि शहरी क्षेत्रों में जिसमें अजीतमल, बाबरपुर, अटसू तथा अनन्तराम शामिल हैं, कि आय प्राप्त के साधन मुख्यतः कृषि, पशुपालन, सिलाई, राजगीरी, रेशम पालन, कुटीर उद्योग जैसे- दरी बनाना, टोकरी बनाना, खिलौने बनाना आदि, दुकानदारी तथा सरकारी सेवा आदि हैं। अन्य आय के साधनों में मण्डी व किसानों के खेत से प्राप्त सामग्री का बेचना तथा गांव-गांव जाकर फेरी द्वारा खाद्य पदार्थ तथा कपड़ा आदि बेचना है।

महिला पुरुष रोजगार भागीदारी के सम्बन्ध में दोनों विकास खण्डों में आंकड़ों से स्पष्ट हुआ है कि प्रत्येक आयु वर्ग में औसतन शहरों तथा गांवों में पुरुषों की रोजगार भागीदारी महिलाओं से अधिक है, विशेषकर 18-50 आयु वर्ग में। शायद इस आयु वर्ग में लोग कार्य योग्य हैं व अपनी जिम्मेदारी परिवार के प्रति समझते हैं। इसलिए महिला तथा पुरुष की रोजगार भागीदारी लगभग बराबर की है। अजीतमल विकास खण्ड में 0-10 आयु वर्ग में गांव तथा शहर दोनों में भागीदारी बराबर की है। इसका कारण है कि अजीतमल शहर भी ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ा है, इसलिए शायद बच्चे कृषि, पशुपालन तथा दुकानदारी में अपनी छोटी सी भूमिका प्रस्तुत करते हैं, ऐसा गरीबी के कारण हो सकता है।

बिधूना के शहरी क्षेत्रों में बालिकाओं तथा स्त्रियों की रोजगार सहभागिता पुरुषों से कम है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बराबर की है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्रों में माना जा सकता है कि अधिकांशतः बालक तथा बालिकायें कृषि एवं पशुपालन रोजगार से जुड़े हैं जबकि शहरों में केवल पुरुष ही रोजगार में संलग्न हैं। दोनों विकास खण्डों में वृद्धावस्था में रोजगार सहभागिता स्त्री तथा पुरुष दोनों में कम है, जिसका कारण वृद्धावस्था के कारण कार्यक्षमता का कम होना है। अजीतमल विकास खण्ड में स्त्री तथा पुरुष दोनों की रोजगार सहभागिता बिधूना विकास खण्ड से अधिक है, इसका कारण अजीतमल विकास खण्ड का अधिक विकसित होना, शिक्षा के अच्छे साधन होना तथा आवागमन की अच्छी व्यवस्था होना है।

दोनों विकास खण्ड अजीतमल तथा बिधूना के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्पष्ट हुआ है कि यहाँ दोनों क्षेत्रों में रोजगार के साधन लगभग समान हैं। इनमें इस जनपद के लोग लिप्त रहकर जीविका अर्जन करते हैं। दोनों विकास खण्डों में कृषि, पशुपालन, सिलाई, राजगीरी, कुटीर उद्योग, दुकानदारी, सरकारी सेवा तथा अन्य रोजगार के साधन हैं, जिससे पारिवारिक आय प्राप्त होती है।

सन्दर्भ सूची

1. वर्किंग ग्रुप मिनिस्टरी ऑफ एग्रीकल्चर (1994): "एवेलेबिलिटी ऑफ फूड स्टॉक फार कन्जमसन"
2. अभिताभ तिवारी (1996-97): "भारत में शिक्षा, विशेष रूप में महिलाओं के सम्बन्ध में", "वार्ता" XVII अप्रैल-अक्टूबर, पृ.सं. 115-123.
3. रंजन राय (2000): "पॉवर्टी हाउसहोल्ड, साइज एण्ड चाइल्ड वैलफेयर इन इण्डिया", इकोनोमिक एण्ड पोलीटिकल वीकली, सितम्बर 23, पृ.सं. 3511
4. जी.सी. त्रिपाठी एवं राकेश कुमार पाण्डेय (2001): "इम्पैक्ट ऑफ डवलपमेन्ट ऑन वेजेस एण्ड इम्पलाइमेन्ट ऑफ रूरल लेवर इन इण्डिया", वार्ता (XXI) अप्रैल से अक्टूबर, पृ.सं. 13-25.
5. गवर्नमेन्ट ऑफ उ.प्र. (2002): "दसवीं पंचवर्षीय योजना", वॉल्यूम I तथा II
6. वर्ड बैंक (2002): "इण्डिया-पॉवर्टी इन इण्डिया" दि चेलेंज ऑफ उ.प्र.
7. सुभ्राभ्रता भट्टाचार्या (2003): "रूरल मार्केटिंग-दि हाल एक्सपीरियेन्स", हिन्दू सर्वे ऑफ इण्डियन, इन्डस्ट्री
8. एस.पी. तिवारी (2005): "एलीवेशन ऑफ पॉवर्टी इन उ.प्र. एनुअल कॉन्फ्रेन्स", यू.पी. इको. एसो., 18-19 दिसम्बर
9. हिमांशू शेखर सिंह एवं पंचाली सिंह (2005): "रूरल इण्डिया अपॉरच्युनिटी एण्ड चैलेन्ज" एनुअल

कॉन्फ्रेन्स, यू.पी. इकोनॉमिक एसोसियेशन, 18-19 दिसम्बर, पृ.सं. 28-37

10. अशोक कुमार (2006): "ग्रामीण भारत में लड़कियों की शैक्षणिक स्थिति", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 5.

11. उमेश चन्द्र अग्रवाल (2006): "बाल श्रमिक की विभीषिका", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 32.

12. नरैनी सिंह जोशी (2006): "ग्रामीण बाजार", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 25-29

13. ब्रजेश कुमार तिवारी (2006): "बाल श्रमिक अस्तित्व की खोज में", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 40.

14. योगेन्द्र के. अलख (2006): "भारतीय कृषि समस्यायें और सम्भावनायें", योजना, अगस्त, पृ.सं. 17-24.

15. राकेश शर्मा (2006): "बाल श्रम उन्मूलन के लिये आवश्यकता है- वैकल्पिक रोजगारी की", कुरुक्षेत्र, नवम्बर, पृ.सं. 42

15. वाई.एस.पी. थोराट (2006): "सहकारी ऋण संस्थाओं का पुनर्जीवन", योजना, अगस्त, पृ.सं. 43-46

17. सुभाष सेतिया (2006): "रोजगार के क्षेत्र में महिलायें", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 43.

18. शान्ता सिन्हा (2006): "गरीबों के लिये शिक्षा का हक", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 15-19

19. देवी सेट्ठी (2006): "सहकारी कृषक स्वास्थ्य कार्यक्रम यशस्विनी", योजना, अप्रैल पृ.सं. 38

20. शंकर दयाल शर्मा (2007): "बीस सूत्रीय कार्यक्रम और ग्रामीण विकास", योजना, जनवरी, पृ.सं. 42

21. इन्दिरा राजारमण (2007): "ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में महिलायें", योजना, मई, पृ.सं. 28.

22. एस नारायण (2007): "रोजगार सम्भावना पर एक नजर", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 25.

23. मथुरा स्वामी (2007): "खाद्य एवं पोषण असुरक्षा को कम महत्व", योजना, मई, पृ.सं. 13.

24. उमेश चन्द्र अग्रवाल (2008): "कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 35.

25. अपराजिता पाण्डया (2008): "जड़ी बूटी का रास्ता"

26. अखिल कुमार मिश्र (2008): "कमजोर वर्गों के लिये कल्याणकारी योजनायें", कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 24-28.

27. किरन बेदी (2008): "महिला सशक्तिकरण-कुछ विचार", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 15.

28. कुमारी रूपम (2008): "बाल विकास एवं पोषण", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 23.

29. जवाहर लाल गुप्ता (2008): "ग्रामीण गरीबी एवं रोजगार के बदलते स्वरूप", कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 8.

30. निर्मल कुमार आनन्द (2008): "कुपोषण निवारण का सहकारी प्रयास", कुरुक्षेत्र, अक्टूबर, पृ.सं. 45.

31. मंजुला गर्ग एवं पुनीत कुमार (2008): "महिला अस्मिता की चुनौती", योजना, मार्च, पृ.सं. 65.

32. रत्ना कपूर (2008): "वैश्यावृत्ति की रोकथाम और महिला मानवाधिकार", योजना, फरवरी, पृ.सं. 13-14.

33. रत्ना श्रीवास्तव (2008): "बालिका शिक्षा की स्थिति", योजना, सितम्बर, पृ.सं. 31.

34. रहीस सिंह (2008): "गरीबी निर्धारण का अर्थशास्त्र", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 47.

35. कुमारी रूपम (2008): "बाल विकास एवं पोषण" योजना, नवम्बर, पृ.सं. 23-24

36. सोना दीक्षित व अरुण कुमार दीक्षित (2008): "हिंसक होता बचपन", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 25-26

37. सुधीश कुमार पटेल (2008): "कृषि में रोजगार के बढ़ते अवसर", कुरुक्षेत्र, फरवरी, पृ.सं. 4-6

38. संगीता कुमार (2008): "अर्थव्यवस्था में महिलाओं की स्थिति", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 19

www.ignited.in

39. रोहनी वी.एस. तथा जयराम भट्ट (2009): "रूरल डवलपमेन्ट एफर्ट इन इण्डिया", इकोनोमिक एफेयर वाल्यूम 45, 4 दिसम्बर, पृ.सं. 199-202

40. अंगद सिंह (2010): "गरीबी निवारण-समस्या और समाधान के रास्ते" नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पावर्टी डिबेट, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, नवम्बर, पृ.सं. 12-13.

41. डा. डी. देवनाथन (2010): "पॉवर्टी एलीवेशन प्रोग्राम एण्ड दलित इम्पावरमेन्ट इन तमिलनाडु", नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर पृ.सं. 16-17.

42. डा. विनीता सिंह (2010): "प्रोब्लम ऑफ चाइल्ड लेबर इन ग्लोबलाइजेशन्ड विलेज", नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 40-41.

43. डा. सलायमा जोव एण्ड टोमी वर्गीज (2010): "रोल ऑफ वूमेन इम्पावरमेन्ट इन पॉवर्टी एरेडीकेशन एण्ड सोशियो इकोनोमिक चेन्ज इन केरल", नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 15-16

44. पद्मा त्रिपाठी (2010): "भारत में निर्धनता की स्थिति का आकलन", नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट", भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, 20, 21, पृ.सं. 8-9.

45. पहलाद कुमार (2010): "भारत में गरीबी उन्मूलन में मनरेगा की प्रासंगिकता", नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑन रिसेन्ट पॉवर्टी डिबेट इन इण्डिया, भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, इलाहाबाद, नवम्बर, पृ.सं. 36-37.

46. नवीन पंथ (2010): "गरीबी उन्मूलन एवं खाद्य सुरक्षा", योजना, पृ.सं. 15.

47. अमर उजाला (2011): "भारत में गरीबी" दिनांक 09.07.2011

48. अरविन्द केजरीवाल (2011): "भ्रष्टाचार मुक्त शासन व्यवस्था का अधिकार", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 13.

49. अजीत कुमार सिंह (2011): "उ.प्र. के ग्रामीण निर्धन में भूमि वितरण का प्रभाव", योजना, नवम्बर, पृ.सं. 28-30.

50. अरुण कुमार वर्मा (2011): "मीडिया एवं सामाजिक परिवर्तन", योजना, अगस्त, पृ.सं. 34.

51. आनन्द कुमार खरे (2011): "बाल श्रम की समस्या एवं निवारण", नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया

52. एन.सी. सक्सेना (2011): "कृषि भूमि में महिलाओं का उत्तराधिकारी हक", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 11.

53. गौरव कुमार (2011): "बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न उपलब्धता", योजना, जुलाई

54. जयराम रमेश (2011): "भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुर्नसंस्थापन विधेयक", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 7.

55. दिव्या पाण्डेय (2011): "मानवाधिकार एवं कन्या भ्रूण हत्या", योजना, अप्रैल, पृ.सं. 43

56. पद्मा त्रिपाठी (2011): "महिला सशक्तिकरण व लैंगिक समानता", नेशनल सेमीनार, तिलक महाविद्यालय, औरैया

57. पद्मा त्रिपाठी (2011): "भारत में निर्धनता की वास्तविकता एवं निवारण", अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 9-10.

58. मुकेश शर्मा एवं सुषमा अग्रवाल (2011): "निर्धनता उन्मूलन में रोजगारपरक शिक्षा का महत्व", अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 8-9.

59. टाइम्स ऑफ इण्डिया रिपोर्ट (2011): "पॉवर्टी सिचुयेशन इन इण्डिया", 1 अप्रैल 2011

60. डी.पी. सिंह (2011): "माइग्रेशन पॉवर्टी एण्ड डवलपमेन्ट इन उ.प्र."

61. रेनू गुप्ता (2011): "नई सदी में भारत-बाल श्रम एक चुनौती", नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया, पृ.सं. 11-12

62. लीला विसारिया (2011): "भारत की 15वीं जनगणना", योजना, जुलाई, पृ.सं. 6-9

63. वेद प्रकाश अरोरा (2011): "जनगणना का दशकीय सफर", योजना, जुलाई

64. सरस्वती राजू (2011): "बाल लिंग अनुपात-उभरते प्रतिमान", योजना, जुलाई, पृ.सं. 13-19

65. सुभाष शर्मा (2011): "सेवा क्षेत्र में बाल मजदूरी", योजना, सितम्बर, पृ.सं. 17

66. साहब सिंह (2011): "भारत में गरीबी निवारण और आर्थिक विकास- चुनौतियां एवं समस्या समाधान", अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी, 4, 5, 6 मार्च, वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़, पृ.सं. 7

67. शभ्य आलम एवं निर्भय सिंह (2011): "बाल श्रम एक अनसुलझी समस्या", नेशनल सेमीनार, 29-30 जनवरी, तिलक महाविद्यालय, औरैया, पृ.सं. 108-109

68. अजय कुमार सिंह (2012): "ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण", योजना, अक्टूबर, पृ.सं. 23.

69. अशिमा गोयल (2012): "पंचवर्षीय योजनाओं का मूल्यांकन और भविष्य", योजना, जनवरी, पृ.सं. 45.

70. ममता मोहन (2012): "सशक्तिकरण-एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण", योजना, जून, पृ.सं. 43.

71. बजट (2011-12): भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली

72. टी.आर. जैन, मुकेश त्रिहान तथा राजू त्रिहान (2012): "भारतीय आर्थिक समस्यायें", पृ.सं. 89-99

73. एफ.ए.ओ. कारपोरेट डाक्यूमेन्ट (रीजनल आफिस फॉर एशिया एण्ड पेसीफिक) "इण्डियन एक्पीरियेंस आन हाउसहोल्ड फूड एण्ड न्यूट्रीशन सिक्योरिटी"

Corresponding Author

Dr. Padma Tripathi*

Associate Professor, Economics, K.K.P.G. College, Etawah